7 SEP 2019

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-XVI/VIII (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/19(N-M)-HL-**HL16/8**

निर्धारित समय: तीन घंटे Time allowed: Three Hours	अधिकतम अंक: 250 Maximum Marks: 250

नाम (Name): Devendra Prakash Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): T-8 8 07/09/19

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2019] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2019]:

1	1	3	4	5	1	0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained):

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का भी उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) त्याग, तप, भिक्षा? बहुत हूँ जानता मैं भी, मगर,
त्याग, तप, भिक्षा, विरागी योगियों के धर्म हैं;
याकि उसकी नीति, जिसके हाथ में शायक नहीं;
या मृषा पाषण्ड यह उस कापुरुष बलहीन का,
जो सदा भयभीत रहता युद्ध से यह सोचकर
ग्लानिमय जीवन बहुत अच्छा, मरण अच्छा नहीं।

दिनकर ओजगुण के कवि हैं। उनके काव्य में आदर्शवाद के स्थान पर मानवतावाद एवं यथार्थवाद तथा पारलौकिता के स्थान पर इहलौकिकता दिखाई देती है।

जो कुरुक्षेत्र से ली गई है

उक्त पंक्तियों में भीष्म के द्वारा युधिष्ठिर के प्रश्न का उत्तर दिया जा रहा है।

भीष्म कहते हैं कि त्याग, तप, भिक्षा संन्यासियों के गुण हैं। ये गुण उन बलहीनों को शोभा देते हैं, जिनमें साहस का तेज नहीं है।

जो व्यक्ति युद्ध से भयभीत रहता है, उसका जीवन किसी काम का नहीं है.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

जीवन की बजाय उसे मरण को अंगीकार कर लेना चाहिए।

<u>विशेष</u>

① इसी तरह का ओज गुण दिनकर ने अन्यत्र भी दर्शाया है -

" छीनता हो, कोई स्वत्व
और तू त्याग तप से काम ले
यह पाप है।"

② उक्त पंक्तियों में पुरु के प्रति कवि के विचार सराहनीय है क्योंकि वर्तमान <u>प्रासंगिकता</u> से युक्त हैं।

वर्तमान सीमापार आतंकवाद तथा नक्सल वाद के प्रति सरकार का आक्रामक रवैया इसी भावना से प्रेरित है

③ <u>शिल्प पक्ष</u>

भाषा - खड़ी बोली

रस - वीर रस

अलंकार - अनुप्रास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) निकल रही थी मर्मवेदना, करुणा विकल कहानी-सी,
वहाँ अकेली प्रकृति सुन रही, हँसती-सी पहचानी-सी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद का काव्य छायावादी प्लेटोनिक प्रेम तथा प्रकृति की कोमलकांतता को प्रतिबिम्बित करता है। उक्त पंक्तियाँ आधुनिक काल के एकमात्र भावप्रधान महाकाव्य कामायनी से उद्धृत है

इन पंक्तियों में प्रलय पश्चात् की पीड़ा को दर्शाया है।

कवि ने कहा है कि प्रलय के पश्चात् हिमालय के शिखर पर बैठा मनु एक प्रकार की मार्मिकता से युक्त है।

उसकी करुणा की यह कहानी और कोई सुनने वाला नहीं है। केवल प्रकृति ही वहाँ यह सब सुनने के लिए उपस्थित है। अर्थात् प्रलय ने सर्वस्व नष्ट कर दिया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

काव्य सौंदर्य

भाषा - तत्सम खड़ी बोली

रस - ~~रौद्र~~ करुणा रस

शब्द शक्ति - अभिधा

अलंकार - मानवीकरण

भाव सौंदर्य

① इसी तरह प्रकृति का रौद्र रूप कामायनी में अन्यत्र भी है.

" • हिमालय के उत्तुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छांह
एक पुरुष भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह।"

② प्रकृति के मानवीकरण की प्रकृति छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता है। कामायनी में भी यह अन्यत्र स्पष्ट हुआ है.

" कर रही लीलामय आनन्द
महाचिति सजग हुई सी व्यक्त।"

③ उक्त पंक्तियाँ प्रकृति के ~~द~~ दुरुपयोग के संदर्भ में वर्तमान मानव के लिए एक चेतावनी की भांति है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम सभ्य हो, 'मार्केट' जिनका सात सागर पार है,
पर ग्राम की वह हाट ही उनका 'बड़ा बाज़ार' है।
तुम हो विदेशों से मँगाते माल लाखों का यहाँ,
पर वे अकिंचन नमक-गुड़ ही मोल लेते हैं वहाँ।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नवजागरण चेतना के दोनो तत्व आत्म-गौरव तथा आत्म-आलोचना मैथिलीशरण गुप्त की कविता भारत-भारती में आद्यन्त उपस्थित है।

उक्त पंक्तियों में कवि ने भारत की दुर्दशा का कारण स्पष्ट किया है।

कवि कहते है कि ब्रिटिश नीतियों ने हमारा विचार-व्यवहार परिवर्तित किया और उसके प्रभाव में हम विदेशी वस्तुओं का प्रयोग कर स्वयं को सभ्य मानते है

जिसके कारण स्थानीय वस्तुओं की बिक्री करने वाले हाट बाजार का महत्व कम हो गया है। इस तरह विदेशी वस्तुओं के आयात के कारण धन की बर्बादी होती है,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

जो हमारी दरिद्रता का कारण है।

शिल्प पक्ष

① कविता की भाषा तत्सम खड़ी बोली है।

② कविता की भाषा के संबंध में गुप्त जी के विचार निम्न लिखित है

" है भव्य भारत ही मातृभूमि हमारी हरी भरी
हिन्दी है राष्ट्रभाषा, लिपि है नागरी।"

③ अभिधा शब्द शक्ति का प्रयोग है।

भाव पक्ष

① कविता के माध्यम से कवि स्थानीय उद्योगों की स्थापना पर बल देते हैं। वे अन्यत्र लिखते हैं-

" अब तो उठो बंधुओ, निज देश की जय बोल दो
बनने लगे वस्तुएं यहाँ, कल-कारखाने खोल दो।"

② भारतेन्दु ने भी अपनी कविता में स्थानीय उद्योगों की स्थापना पर बल दिया है-

" जानि सकै सबकुछ सबहि विविध कला के भेद
बनने लगे कल की वस्तुएं इहैं, मिटत दीनता खेद।"

③ उपर्युक्त कविता वर्तमान 'मेक इन इंडिया' के रूप में प्रासंगिक है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का,-प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण,-
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन,-
काँपते हुए किसलय,-झरते पराग-समुदय,-
गाते खग-नव-जीवन-परिचय-तरु मलय-वलय,-
ज्योति:प्रपात स्वर्गीय,--ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,-
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

निराला संश्लिष्ट अर्थबोधन तथा उत्कृष्ट प्रयोगों के कवि है। वे किसी विचारधारा में बंधने की बजाय समय के अनुरूप प्रसंग का चयन एवं विस्तार करते है। राम की शक्तिपूजा में यही भाव उपस्थित है।

उक्त पंक्तियों में उन्होंने राम तथा सीता के प्रसंग को उठाया है, जो पुहरत राम को याद आता है।

जब राम-रावण युद्ध होता है और प्रथम दिवस की हार हो जाती है तब सभा में राम शांत बैठे है। उनको विवाह की घटनाएँ याद आती है जिसमें वे सीता से मिलने की घटना याद करते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इस तरह का प्रसंग एक रमणीक उद्यान की भाँति है, जहाँ पक्षी, पशु, सरने आदि की उपस्थिति है।

विशेष

① प्रस्तुत पद्यांश की भाषा तत्समी खड़ी बोली है। जो छायावादी कोमलकांतता से युक्त है।

② नयनों का-नयनों से गोपन प्रिय संभाषण एक अद्भुत बिम्ब क्षमता का प्रदर्शन है।

③ खड़ी बोली की समास क्षमता का प्रदर्शन, मानो भारतेन्दु को प्रत्युत्तर है।

④ राम के ऐसी ही स्थिति कविता में अन्यत्र भी है - 'रवि हुआ अस्त'

⑤ शब्दों का सटीक प्रयोग, आचार्य शुक्ल के निबंध कविता क्या है के प्रतिमानों के समान है।

जैसे - पृथ्वी तनया
- जानकी

⑥ भरत राम को भोग दिलाने के उद्देश्य से ये पंक्तियाँ महत्वपूर्ण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) हाथ जिसके तू लगा,
पैर सर रखकर वो पीछे को भगा
औरत की जानिब मैदान यह छोड़कर,
तबेले को टट्टू जैसे तोड़कर,
शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा
तभी साधारणों से तू रहा न्यारा।

किसी विचारधारा में बंधने की बजाय यथार्थ को प्रकट करना तथा उसे विशिष्ट जन सुलभ से सामान्य जन तक पहुँचाना एवं मार्क्सवादी जड़ता पर चोट करना निराला कृत कुकुरमुत्ता की विशेषता है।

उक्त पंक्तियों में कवि ने कुकुरमुत्ता की विशेषताओं का बखान किया है।

कवि कहते है कि कुकुरमुत्ता जिसके भी हाथ लगा है, वह अस्थिर हो गया। कुकुरमुत्ता की विशेषता बताते हुये वे उसकी तुलना अनेक प्रतिमानों से करते हुये उसे स्त्री का चहेता तथा साधारण वर्ग में भी विशिष्टता धारण करने वाला बताते है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

काव्यगत सौंदर्य

① भाषा - देशज शब्द युक्त खड़ी बोली

भाव / रस - शांत

शब्द शक्ति - अभिधा

संवेदना -

① कवि ने कुकुरमुत्ता को साधारण वर्ग का प्रतिनिधि बताया है किन्तु मार्क्सवादी धारणा से युक्त नहीं है।

② वे अन्यत्र भी कुकुरमुत्ता की विशेषता बताते है -

" अबे सुन बे गुलाब
पाई खुशबू रंगों आब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा कैपिटलिस्ट ।"

③ शाह, राजों, अमीरों का प्यारा मार्क्सवादी जड़ता का खंडन है। क्योंकि गेहूँ तथा गुलाब दोनो जीवन के लिए आवश्यक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) "नागार्जुन जनजीवन, धरती व मानव प्रेम के पुजारी हैं।" विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन स्वतंत्रता के पश्चात् प्रगतिवादी विचारधारा के कवि है किन्तु वे प्रगतिवाद की जड़ताओं का खंडन करते है।

उनका काव्य ~~क~~ जीवन की यथार्थता को बिना किसी लाग लपेट के ~~बिना~~ सीधे प्रकट कर देने से युक्त है।

उन्होंने सामान्य जनजीवन को ही अपनी रचना का विषय बनाया। सामाजिक विद्रूपताओं ~~व~~ पर चोट करने के साथ-साथ उन्होंने काल्पनिकताओं का खंडन किया।

उन्होंने छायावादी कवियों द्वारा की गई कल्पनाओं जैसे हिमालय पर कुबेर की नगरी तथा शिव का वास आदि की कठोर आलोचना की तथा आनुभाविक यथार्थ को प्रकट किया -

"कहाँ ~~गया~~ गया धनपति कुबेर,
कहाँ गई उसकी वह अलका।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उन्होंने किसी पूर्वाग्रह से युक्त हुये बिना गेहूं के प्रति आकर्षण एवं गुलाब के प्रति उपेक्षा से दूर होते हुये दोनों को समान महत्व प्रदान किया।

उन्होंने अपनी कविताओं में प्रकृति को भी सम्मिलित किया, जो प्रकृति से उनके प्रेम को दर्शाता है। अकाल और उसके बाद कविता इसका सशक्त उदाहरण है -

" ~~कई~~ ~~उस~~
कई दिनो तक चूल्हा रोया।
चक्की रही उदास
कई दिनो तक कानी कुतिया
सोई उसके पास।"

नागार्जुन ने अकाल का जितना सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत किया है, तुलसी के पश्चात् इस तरह का विश्लेषण कहीं नहीं मिलता।

साथ ही अकाल के कारण की खोज

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

करते हुये उन्होंने मानवजनित कारकों को अधिक प्रभावी कारण माना।

उन्होंने जन-जन की आवाज बनने का प्रयास किया। मानव के प्रति उनका समता का भाव कबीर के 'साईं के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय' का प्रभावी उदाहरण है।

उन्होंने हरिजन गाथा कविता के माध्यम से अपनी संवेदनशीलता को प्रकट किया। उन्होंने लिखा है-

" रोता हूं, लिखता हूं
कवि को बेकाबू पाता हूं।"

नागार्जुन का सामाजिक झुकाव एवं निम्नवर्ग की समस्याओं को उठाना उन्हें आधुनिक जनकवि का दर्जा दिलाता है। वे सत्य को लिखने का प्रयास करते है और इसके लिए प्रत्येक कीमत चुकाने को तत्पर है -

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

" जनता मुझसे पूछ रही,
क्यों ~~हकलाऊँ~~ 'बतलाऊँ।
जनकवि हूँ साफ कहूँगा
क्यों हकलाऊँ।'

इस प्रकार स्पष्ट है कि नागार्जुन ने साधारण मानव को, प्रकृति के साधारणत्व को तथा साधारण जीवन को महत्व प्रदान किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ खें।

se do not write ing except the ion number in pace)

(ख) 'युद्ध और शांति की समस्या वास्तव में सामाजिक समता की समस्या है।'- कुरुक्षेत्र के आधार पर इस मत पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कुरुक्षेत्र के माध्यम से दिनकर ने तत्कालीन युद्ध तथा उसके कारण उत्पन्न अशांति को ऐतिहासिकता के आलोक में उठाया है।

उन्होंने महाभारत के प्रसंग में युधिष्ठिर तथा भीष्म के ~~प्रश्न~~ सवाल-जवाब के माध्यम से मार्क्सवादी विचारधारा के अनुरूप युद्ध को वर्ग विभाजन तथा विषमता से उत्पन्न एक समस्या माना है।

उन्होंने लिखा है कि संघर्ष का मूल कारण समाज में उपस्थित दो वर्ग - शोषक एवं शोषित के मध्य टकराव है। यदि सामाजिक सौहार्द्र की स्थापना करनी है, तो इस विषमता को मिटाना है।

वे लिखते है -

" जब तक मनुज मनुज का,
यह सुख भाग नहीं सम होगा
शमित न होगा कोलाहल,
संघर्ष नहीं कम होगा।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वे इसी संघर्ष की अवधारणा को तत्कालीन पूँजीवादी शोषण से जोड़ते हैं। पूँजीवादी शोषण का स्वरूप अधिकार प्रदान कर उन्हें सीमित कर देने से संबंधित है -

"हिलो डुलो मत,
हृदय रक्त मुझे अपना पीने दो
अचल रहे साम्राज्य शांति का
जीओ और जीने दो।"

अपनी मार्क्सवादी विचारधारा के आलोक में उन्होंने इस संघर्ष के विरुद्ध मानव की जैविक की अवधारणा को भी प्रकट किया है, क्योंकि मानव न केवल परिस्थितियों को सृजित करता है बल्कि वह उनमें परिवर्तन भी करता है -

"ऊपर सबकुछ शून्य-शून्य
कुछ भी नहीं गगन में
जो कुछ भी है, धर्मराज
इस मिट्टी में, जीवन में।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स स्थान में प्रश्न
अतिरिक्त कुछ
do not write
g except the
n number in
ce)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साथ ही वे भविष्य की समतावादी व्यवस्था की ओर भी संकेत करते हैं, जब वे कहते हैं-

"आशा के दीप जलाये चल धर्मराज,
मुक्त होगी धरती एक दिन रणभीति से।"

यह रणभीति की स्थिति सामाजिक समानता की ही स्थिति है, जब अधिकार तथा कर्तव्यों के स्तर पर समानता होगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) संवदेना के धरातल पर 'भारत-भारती' की सीमाओं को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत-भारत नवजागरण चेतना के दोनो तत्वों आत्मगौरव - तथा आत्म - आलोचना से युक्त है। यह कविता तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सफल रही।

किन्तु इस कविता की कुछ सीमायें है, जो इसकी प्रभाविता तथा जनाधार को कम करती है।

(क) इसमें तत्कालीन समाज में उत्पन्न बुराईयों की व्याख्या की गई है किन्तु उनके पीछे के कारणों (ब्रिटिश शोषण) को उभारने में सक्षम नहीं रही।

(ख) इस कविता में तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन (स्वदेशी आन्दोलन) की चर्चा नहीं की गई है, जबकि यह प्रभावी था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थान में प्रश्न अतिरिक्त कुछ

do not write except the number in e)

(ग) यह कविता प्राचीन आर्य, हिन्दू तथा पुरुष केंद्रित होने के कारण समाज के सभी वर्गों को संदर्भित नहीं कर पाती।

जैसे -

→ हत भाग्य हिंदू जाति, तुम्हारा पूर्व दर्शन कहाँ

→ सोते रहो हे हिंदुओ, हम मौन करते यहाँ
(आर्य केन्द्रित)

→ पूजन किया पति का स्त्रियों ने,
भक्ति पूर्ण विधान से।
फिर आँचल पसार कर,
विनय की भगवान से (पुरुष केंद्रित)

उक्त संदर्भ में यह स्पष्टीकरण देना आवश्यक है कि यह कविता तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्य प्रणेता रही।

इसमें 'हिन्दू' जाति शब्द भारतेन्दु के हिन्दी - हिन्दू - हिन्दुस्तान की भाँति सम्पूर्ण भारतीय नागरिकों के लिये है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इसके अतिरिक्त समन्वय पर बल देना, इस कविता का मूल उद्देश्य था।

" पीछे जो हुआ सो हुआ
अब सामने देखो सभी।"

सारांशतः स्पष्ट है कि कुछ सीमाओं के बावजूद भारत-भारती तत्कालीन ही नहीं वर्तमान काल में भी प्रासंगिक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थान में प्रश्न
तिरिक्त कुछ

not write
except the
number in

3. (क) 'सूर का भ्रमरगीत नागर-संस्कृति के बरक्श लोक-संस्कृति की प्रतिष्ठा करता है।' इस कथन पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) पदमावत में लोकसंस्कृति की अभिव्यक्ति है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पद्मावत मलिक मोहम्मद जायसी की रचना है, जिसमें उन्होंने तत्कालीन प्रेम तत्व को उभारने के साथ भारतीय लोकजीवन की विस्तृत व्याख्या की है।

पदमावत में वर्णित लोकतत्व का आरंभिक आधार इसमें प्रयुक्त बोली (भाषा) है। जायसी के रचनाकर्म में ठेठ अवधी अपने उसी सौंदर्य तथा मिठास के साथ उपस्थित है। जायसी की इसी निशेषता के संदर्भ में शुक्ल जी ने भी कहा है - ' जायसी की भाषा मधुर है। इसका माधुर्य निराला है।

जायसी की ठेठ अवधी में लोकोक्ति तथा मुहावरों के साथ स्थानीय देशज शब्दों की उपस्थिति उनकी पद्मावत को और अधिक प्रभावी बनाती है।

जैसे - दबंगरा शब्द का प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

- हिय फटा
- सूधी अंगुरी निकसै नहीं घीऊ (मुहावरे)
- नैन चुवहि जस, महवट नीरू।

जायसी की रचना में लोकतत्व की उपस्थिति स्थानीय मेले एवं त्योहारों का वर्णन है। उन्होंने तत्कालीन सभी उत्सवों का वर्णन किया है, जिसमें विवाह उत्सव का वर्णन सराहनीय है।

विवाह का वर्णन करते समय उन्होंने पद्मावती को धौराहर पर चढ़कर रत्नसेन को देखने का प्रसंग दिखाया है।

'पद्मिनी धौराहर चढ़ि,
देहुँ कस रवि, ससि सों गहि।'

लोकतत्व की सहजता का प्रभाव पद्मावत में उस समय दिखाई देता है, जब एक विवाहिता अपनी सास - ननद तथा ससुर द्वारा किये जा रहे शोषण को सखियों से कहती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

पदमावत का लोकतत्व इसमें वर्णित विरह का लोकजीवन से जुड़ने में भी दिखाई देता है। वस्तुत: नागमती रानी होने के बाद भी विरह में रानीपन भूल जाती है और सामान्य जीवन की अपेक्षाए रखती है।

" जेठ जरै जग बहै लुवारा,
उठै बवंडर धिकै पहारा।"

" पुस्प नखत सिर ऊपर आवा
मोहि बिनु नाह मंदिल को छावा।

इसके अतिरिक्त जायसी द्वारा भारतीय लोकजीवन की कहानियों, मिथको तथा अनेक प्रसंगो को उठाया जो पदमावत का लोकतत्व सुदृढ करते है।

साथ ही बारहमासा रूढि का प्रयोग करना तथा विरह दर्शाने में स्थानीय प्रकृति

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

का प्रयोग पद्मावत का लोकतत्व ही है।

सारांशतः स्पष्ट है कि जायसी का रचनाकर्म स्थानीयता के पुट से युक्त होकर भी साहित्य तथा माधुर्यता के धरातल पर विशिष्ट है।

Copyright – Drishti The Vision Founda

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'मुक्तिबोध परंपराभंजक अनगढ़ काव्यभाषा के कवि हैं।' 'ब्रह्मराक्षस' कविता के आधार पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध मार्क्सवादी विचारधारा के कवि है। उनके काव्य का मूल उद्देश्य मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी को उसके ऐतिहासिक कर्तव्य को याद दिलाना है। इसलिए भाषायी स्तर पर अनगढ़ता विद्यमान है।

वे स्वयं अपनी भाषा के बारे में लिखते हुये कहते है कि छायावादी कोमलकांतता को वह नहीं अपना सकते क्योंकि इससे उद्देश्य बाधित होता है।

" अरे इन रंगीन पत्थर फूलों से
मेरा काम नहीं चलेगा।
काव्य चमत्कार उतना ही रंगीन
किन्तु अतिशय रीतल।"

उनकी भाषा के संदर्भ में रघुविलास शर्मा ने लबका तोड़ भाषा कही है, तो नामवर सिंह ने इसे काव्य भाषा की बजाय काव्यात्मक भाषा माना है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

वस्तुतः अपनी कविताओं के माध्यम से मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी को संदर्भित करने वाले मुक्तिबोध के काव्य में भाषाई वैविध्य विद्यमान है।

उन्होंने अपनी भाषाई विशिष्टता को बिम्ब क्षमता से अधिक सुदृढ़ किया है। आचार्य शुक्ल कविता क्या है निबंध मे कहते भी है कि - ~~काव्य~~ काव्य में अर्थग्रहण ही नही, बिम्ब ग्रहण भी अपेक्षित है।

मुक्तिबोध के यहाँ बिम्बों की श्रृंखला विद्यमान है। उन्होंने संश्लिष्ट, स्थिर, गतिशील श्रव्य सभी बिम्बों का प्रयोग किया है।-

- बावडी को घेर, डाली उलझी थी (स्थिर)
- खूब ऊँचा जीना साँवला
  उसकी अंधेरी सीढ़ियां,
  वे अभ्यांतर एक निराले लोक की
  (गतिशील)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- 'बाह धनी मुख छपाछप
क्रुद्ध मंत्रोच्चार (श्रव्य)

उन्होंने भाषायी शुद्धता पर बल ~~देते हुये~~ नहीं देते हुये तत्सम, देशज तथा विदेशज शब्दों का सार्थक समावेश किया है।

- 'कैसी ट्रेजिडी है ~~?~~ नीच।'

- 'मुँडेरों पर बैठी इगर'

सारांशतः स्पष्ट है कि अपनी प्रकृति के अनुसार लिखी परम्परा को न मानने वाले मुक्तिबोध ने भाषाई आधार पर भी नवीनता का संचार किया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'सृजनात्मक रहस्यवाद' के परिप्रेक्ष्य में 'असाध्य वीणा' कविता की अंतर्वस्तु का अवगाहन कीजिये। 15

अज्ञेय की निरीश्वरवाद से ईश्वर की ओर तथा पारलौकिकता से इहलौकिकता की यात्रा में सृजन शक्ति का आह्वान हुआ है और यही आह्वान सृजनात्मक रहस्यवाद के रूप में दिखाई देता है।

वस्तुतः रहस्यवाद एक आनुभाविक स्थिति है, जिसमें असीम के प्रति मोह होता है। असाध्य वीणा में 3 प्रियंवद रूपी असीम ब्रह्म के प्रति मोह से युक्त है।

वीणा साधने की प्रक्रिया में किसी तरह का स्पर्श न कर केवल स्तुति करना तथा उस स्तुति के माध्यम से वीणा वादन सृजनात्मकता को रहस्यवाद से जोड़ता है।

" उस स्पन्दित सन्नाटे में मौन प्रियंवद,
साध रहा था वीणा,
नहीं स्वयं को शोध रहा था।"

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" मुझे स्मरण है, पर मुझको
मैं भूल गया हूँ।"

जब वीणा के माध्यम से प्रियंवद उस ~~कीर~~ किरीट की असंख्य ध्वनियों को महसूस करता है, तब वह वास्तव में रहस्यवाद की अनुभूति करता है।

" ओफ ! नहीं मेरा कुछ
मैं तो स्वयं डूब गया था
शून्य में।
वीणा के माध्यम से मैंने,
वीणा को सौंप दिया था।"

अंत में वीणावादन को वह ब्रह्म का रूप मानता है तथा वीणा के प्रभावों को युगान्तकारी होना, सृजनात्मक रहस्यवाद को दर्शाता है।

वीणा का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति को उसके स्वधर्म से परिचित कराता है और यह स्वधर्म ही व्यक्ति की प्रामाणिकता का एकमात्र

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

खोज है।

" डूब गये सब एक साथ,

सब अलग-अलग एकाकी पार तिरे

× × ×

उठ गई लहर, सब अपने काम लगे,

युग पलट गया।"

सारांशतः स्पष्ट है कि वीणा वादन की प्रक्रिया, उनका वादन तथा वादन के पश्चात् पुनः मौन हो जाना सृजनात्मक रहस्यवाद को अभिव्यक्त करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का भी उद्घाटन कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) प्रमाण! प्रमाण अभी खोजना है? आँधी आने के पहले आकाश जिस तरह स्तम्भित हो रहता है, बिजली गिरने से पूर्व जिस प्रकार नील कादम्बिनी का मनोहर आवरण महाशून्य पर चढ़ जाता है, क्या वैसी ही दशा गुप्तसाम्राज्य की नहीं है?

जयशंकर प्रसाद ~~सच्चा~~ सच्चा राष्ट्रीय चेतना के कवि है, जिनके काव्य में राष्ट्रीयता का पुट उपस्थित रहता है।

उक्त पंक्तियाँ स्कन्दगुप्त नामक नाटक से उद्धृत है। जिनमें पर्णदत्त स्कन्दगुप्त को युद्ध के लिए तैयार करने का आह्वान करते हैं।

पर्णदत्त कहता है कि अभी युद्ध प्रारंभ हो गया है। अत: प्रमाण खोजने में समय व्यर्थ करना बेकार है। जिस तरह आंधी पूर्व आकाश शांत हो जाता है। उसी तरह युद्ध पूर्व यह राज्य भी शांत है।

आगे वह अन्य उपमाओं के माध्यम से गुप्त साम्राज्य की निम्न दशा का परिचय स्कन्द गुप्त को देते है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष

① उक्त गद्यांश की भाषा तत्समी खड़ी बोली है।

② भाषा सहज। सुबोध एवं पठनीय है।

③ उक्त पंक्तियाँ प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना को दर्शाती है, जब वे समकालीन राष्ट्रीय आन्दोलन में सहयोग देते हैं।

④ प्रसाद ने अन्यत्र भी इसी तरह की राष्ट्रीय चेतना प्रकट की है। चन्द्र गुप्त नाटक में प्रस्तुत कथन है-

"जब तुम मालव एवं मागध को छोड़कर सम्पूर्ण आर्यावर्त का नाम नहीं लोगे, तब तक वह नहीं मिलेगा।"

⑤ स्कन्दगुप्त अधिकार सुख को मादक एवं सारहीन मानता है, इसलिए उसे युद्ध मैदान के लिए जाग्रत किये जाने का प्रयास है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) दुनिया में यह सब तो चलता ही रहता है, तुम अकेली कहाँ तक लड़ोगी?..... किसी चीज से अगर सचमुच प्यार हो या वह कीमती हो तो टूट-फूट जाने पर भी उसका मोह नहीं जाता।

प्रस्तुत पंक्तियाँ नई कहानी की प्रतिनिधि पुस्तक एक: दुनिया समानान्तर (राजेन्द्र यादव) से ली गई है।

उक्त पंक्तियों के माध्यम से लेखक स्पष्ट करना चाह रहे हैं कि यह दुनिया स्थिर नहीं है बल्कि गतिशील है।

यह गतिशीलता ही उसे दुरूह बनाती है, जो एक अकेली औरत को निस्सहाय बना देती है।

यदि वास्तव में किसी चीज से मोह होता है, तो यह मोह इतना अधिक व्यापक तथा प्रभावी होता है कि उस वस्तु के नष्ट होने की स्थिति में भी यह मोह का बंधन नहीं छूटता।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष

शिल्प

① भाषा - तत्समी खड़ी बोली

② सहज - सुबोध एवं पठनीय

भाव

(1) संसार की परिवर्तनशीलता को उद्घाटित किया गया है।

(2) सांसारिक वस्तुओं से मोह को दर्शाया गया है।

(3) संत कवियों के यहाँ इसी मोह को दूर करने का प्रयास किया गया।

" माया दीपक नर पतंग।
भ्रमि - भ्रमि इवै पड़ंत।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) एक चीज थी जिसे तुम नष्ट कर देना चाहते थे और वह नष्ट हुई, यह प्रमाणित करते हुए कि वह है। मैं जानती हूँ, कि वह है और दो बार तुम उस पर आक्रमण कर चुके हो और वह उन्हें बचा गया है।

आधुनिक भावबोध, अनुभूति की प्रामाणिकता तथा लघुमानववाद एवं विसंगति बोध से युक्त नई कहानियों का संकलन राजेन्द्र यादव की ~~कहा~~ पुस्तक 'एक दुनिया समानान्तर' है।

उक्त पंक्तियाँ इसी ~~क~~ संकलन की कहानी विजेता से उद्धृत है। ~~जिसके~~ लेखक ~~रमेश बक्षी~~ रघुवीर सहाय है।

लेखक बताना चाहता है कि गर्भ में पल रहे बच्चे पर कई बार प्रयास किये जाने के बावजूद वह अभी भी जीवित है।

नायिका उसे जीवित रखने की कोशिश करती हुई कहती है कि कई प्रयासों की असफलता एक संयोग मात्र नहीं है, अपितु यह उसको प्राप्त एक वरदान को दर्शाता है। यह उसकी जिजीविषा को प्रकट करता है। अत: अब प्रयास बंद करो।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

शिल्प पक्ष -

① भाषा - तत्सम खड़ी बोली

(प्रतीकात्मकता)

② सहज, सुबोध व पठनीय

भाव पक्ष -

① उक्त पंक्तियाँ स्त्री-पुरुष संबंधों के द्वंद्व को दर्शाती है, जहाँ नारी के निर्णय को नहीं स्वीकार किया जाता।

② गर्भपात का घरेलु नुस्खा माँ के लिए हानिकारक होने के बावजूद प्रयोग करना पितृसत्तात्मक समाज को दर्शाता है।

③ नारी चेतना की स्थिति दिखाई देता है। जब वह नायिका निर्णय क्षमता को दर्शाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) मैं खुद अपने आगे खड़ा हूँ, मान्यताओं की सलीब पर टँगा हुआ, लहूलुहान!.... पत्थर का एक बहुत बड़ा ढ़ेर है और लोग आँखें मूँदकर पत्थर मारते हैं.... लोग फूल चढ़ा रहे हैं मान्यताओं पर..... आदमी को बार-बार की नोची-छिछड़ी को दाँतों से नोंच-नोंचकर फेंक रहे हैं.... लोग नंगी औरत के कोमल शरीर को खुरदरे जूट के रस्सों से जकड़कर बाँध रहे हैं..... सिर्फ एक लाचारी का आरोप..... आदमी नहीं, टूटा हुआ, पुराना खण्डहर..... आखिर क्यों?

एक दुनिया : समानान्तर (राजेन्द्र यादव) की कहानियाँ लघुमानववाद तथा विसंगति बोध के साथ-साथ स्त्री-पुरुष टकराहट को दर्शाती है।

उक्त पंक्तियाँ इसी संकलन की कहानी दूध और दवा (मार्कण्डेय) से ली गई है, जिसमें पारम्परिक विद्रूपताओं को उजागर किया है।

लेखक ने लिखा है कि सामाजिक मान्यताएँ मानव को तार्किकता से रहित बना देती है और इसी अतार्किकता के कारण समाज में विभेदन की स्थिति आती है।

सामाजिक मान्यताएँ एक जंजीर की भाँति नारी को जकड़ी रहती है और परम्पराएँ उसका शोषण करती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

शिल्प पक्ष

↳ भाषा - तत्सम खड़ी बोली
(प्रतीकात्मकता)

सहज - सुबोध

भाव पक्ष

① कवि सामाजिक विद्रूपताओं पर चोट करना चाहता है।

② समाज किस तरह अतार्किक नियम बनाता है, यह स्पष्टतः दिखाई देता है।

③ मान्यताएँ वर्तमान ~~समस्या~~ समय की समस्याओं जैसे- डायन प्रथा, जातिगत भेदभाव, लैंगिक विषमता, सम्प्रदायवाद आदि का कारण है। जो इस कहानी की प्रासंगिकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) दोपहर की उस घड़ी में मीडोज अलसाया-सा उँघता जान पड़ता था। जब हवा का कोई भूला-भटका झोंका आ जाता था, तब चीड़ के पत्ते खड़खड़ा उठते थे। कभी कोई पक्षी अपनी सुस्ती मिटाने झाड़ियों से उड़कर नाले के किनारे बैठ जाता था, पानी में सिर डुबोता था, फिर उड़कर हवा में दो चार निरुद्देश्य चक्कर काटकर दुबारा झाड़ियों में दुबक जाता था।

किन्तु जंगल की खामोशी शायद कभी चुप नहीं रहती। गहरी नींद में डूबी सपनों-सी कुछ आवाजें नीरवता के हल्के झीने परदे पर सलवटें बिछा जाती हैं, मूक लहरों-सी तिरती हैं, मानो कोई दबे पाँव झाँककर अदृश्य संकेत कर जाता है, 'देखो, मैं यहाँ हूँ।'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निर्मल वर्मा नवलेखन के सशक्त हस्ताक्षर हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में अस्तित्ववादी विचारधारा के कारण उत्पन्न अजनबीपन, आत्मनिर्वासन को प्रकट किया है।

उक्त पंक्तियाँ परिन्दे कहानी से ली गई है, जहाँ मिस लतिका इसी अजनबीपन का शिकार है।

लेखक लिखते है कि दोपहर के सुन्दर माहौल में जब शांति विद्यमान है उस समय पंछी आराम फरमा रहे है।

जंगल शांत है किन्तु हवा का झौंका उसे अशांत बना देता है। वस्तुतः उक्त पंक्तियाँ मिस लतिका की मनः स्थिति का चित्रण है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① उक्त पंक्तियाँ बेहद प्रतीकात्मक है, जो मिस लतिका के अकेलेपन को उभारती है।

② नई कहानियों में इसी तरह का अकेलापन एक और जिन्दगी में भी दिखाई देता है। जब प्रकाश सोचता है-

'दिन - महीने - साल बीतते चले गये।

③ अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव है, जिसमें सार्त्र ने कहा है कि -

'विसंगति न तो समाज में है और न ही मनुष्य में। यह दोनो के साथ होने में है।'

④ भाषा तत्सम खड़ी बोली है, जो सहज, सुबोध है।

प्रासंगिकता - वर्तमान संदर्भ में देखे तो ~~शहरी~~ शहरीकरण के कारण मानव अजीब बेचैन से मुक्त है। यही प्रभाव ~~ह~~ उक्त पंक्तियों में है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ खें।

se do not write ing except the tion number in space)

6. (क) कथा के धरातल पर ऐतिहासिक होते हुए भी स्कंदगुप्त क्यों एक आधुनिक नाटक है? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) गुलाबराय के निबंध भारतीय संस्कृति के प्रतिपाद्य का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

गुलाबराय शुक्लपूर्व निबंध लेखन परम्परा के अग्रणी निबंधकार हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति निबंध के माध्यम से अपने विचार इसी दृष्टि से प्रकट किये हैं।

सर्वप्रथम उन्होंने संस्कृति को परिभाषित किया और इसके अंग्रेजी रूप 'culture' के आधार पर अनेक कल्पनाएँ की। जैसे एग्रीकल्चर मतलब खेती करने की परम्परा।

इसके पश्चात् उन्होंने संस्कृति को दो भागों में विभक्त किया। बाह्य रूप में संस्कृति किसी समाज के रहन-सहन, भाषा, खान-पान का प्रतिनिधित्व करती है।

इसी आधार पर उन्होंने ब्रिटिश तथा भारतीय जलवायु की तुलना की। उन्होंने लिखा कि - "भारत उष्ण कटिबंधीय देश है। यहाँ पानी की उपलब्धता के कारण हाथ धोकर खाने की परम्परा का विकास हुआ।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

आगे वे खान-पान के स्तरों पर भी यूरोपीय तथा भारतीय संस्कृति की तुलना करते है और पाते है कि शीत जलवायु के कारण यूरोपीय जीवन का अभिन्न हिस्सा मदिरा है।

इसी तरह भाषायी आधारों पर भी वे यूरोपीय तथा भारतीय संस्कृतियों की तुलना करते है।

संस्कृति के उनका आंतरिक पक्ष से तात्पर्य किसी संस्कृति के केन्द्रीय मूल्यों से है। वे स्पष्ट करते है कि प्राचीनकाल से ही सहिष्णुता की भावना हमारी संस्कृति का विशेष गुण रहा है।

वे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की भाँति ही अच्छे गुणों को अपनाने की सलाह देते है। भारतेन्दु ने ब्रिटिश शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में अपने नाटक भारत दुर्दशा में लिखा है कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" देखो विधा का सूर्य पश्चिम से उदय हुआ चला आता है।"

उन्हीं की भाँति बाबू गुलाबराय ने भी बाहरी आवश्यक तत्वों के समावेश पर बल दिया।

तत्कालीन सामुदायिकता की समस्या की समीक्षा करते हुये वे लिखते है कि ब्रिटिश विजातीय मूल्यों का समावेश इसका कारण है और इस विकार को दूर किया जाना आवश्यक है

यह निबंध वर्तमान में भी प्रासंगिक है। क्योंकि जिस तरह धर्म की पाखंडी व्याख्या इसे सर्वेसर्वा बनाने पर तुली है। ऐसे में आवश्यक है कि संस्कृति के मूल गुणों की ओर जाये।

सहिष्णुता सदियों से हमारा मूल तत्व रहा है। अतः इसे अपने आचार - विचार एवं व्यवहार में स्थान दे ताकि गंगा - जमुनी तहजीब को सुदृढ़ता मिले।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

सारांशतः स्पष्ट है कि बाबू गुलाबराय का निबंध भारतीय संस्कृति एक महत्वपूर्ण निबंध है, जो वर्तमान में भी प्रासंगिक हो

Copyright – Drishti The Vision Foundati

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) 'भारत-दुर्दशा' नाटक में तत्कालीन समाज का जो प्रतिबिंबन हुआ है, वह आज कहाँ तक प्रासंगिक है? युक्तियुक्त विवेचना कीजिये। 15

भारतेन्दु सजग - सामाजिक- राष्ट्रीय चेतना के रचनाकार है। उनकी रचनाओं में समकालिकता इतनी प्रभावी होती है कि कभी- कभी यह अपनी ऐतिहासिकता त्यागकर वर्तमान में साकार लगती है।

भारत - दुर्दशा नाटक में उन्होंने तत्कालीन समाज के विनाश के कारण का उल्लेख किया है। बाहरी कारकों में उन्होंने बाहरी आक्रमणों को जिम्मेदार माना है

वहीं ~~अन्तर्क्रि~~ आंतरिक कारकों में ~~वा~~ सामाजिक विद्रूपताओं ~~को~~ तथा वैचारिक स्थूलता को प्रमुख कारण माना है।

वर्तमान संदर्भ में देखा जाये तो ~~1~~ पश्चिमी अंधानुकरण ने भारतीय संस्कृति को इसके मूल तत्व से दूर कर दिया है। वैश्वीकरण ने युद्ध की बजाय आंतरिक विचार एवं व्यवहार को परिवर्तित कर हमें विनाश की ओर धकेल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

दिया है।

वर्तमान में जिस तरह पर्यावरण का विनाश, शहरीकरण की समस्याएँ विकसित हुई है, वे कहीं-न-कहीं पश्चिमीकरण का प्रभाव है।

आंतरिक कारकों की वर्तमान उपस्थिति भारतेन्दु के सदृश ही उपस्थित है। धर्म के नाम पर उत्तरोत्तर विभेद तथा टकराव भारतेन्दु काल की भाँति जारी है–

"शैव शाक्त वैष्णव मत अनेक प्रगटि चलाए
जाति अनेकन करि, ऊँच और नीच बनाये।"

जिस तरह मदिरापान को भारतेन्दु ने एक बड़ा कारण माना था। उसी तरह वर्तमान में लगातार बढ़ता मदिरापान अनेक समस्याओं की जड़ बन गया है। इसके कारण जनांकिकीय लाभांश की स्थिति से लगातार दूर होता जा रहा है, साथ ही आंतरिक सुरक्षा को खतरा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कर की अधिकता वर्तमान में भी उतनी तीव्रता से आम जनको शोषित कर रही है किन्तु वर्तमान व्यवस्था में धन बहिर्गमन की बजाय स्थानीय उपयोग हो रहा है।

वैचारिक वर्ग की स्थूलता तत्कालीन समय में एक बड़ी समस्या थी। वर्तमान समय में पेड न्यूज, पीत पत्रकारिता, फेक न्यूज जैसी समस्याएँ इसी संदर्भ को दर्शाती है।

सारांशतः स्पष्ट है कि भारत-छवि के कारण आज भी भारत में उपस्थित है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दलित-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' का अनुशीलन कीजिये। 15

अच्छा लेखक वह है, जो आत्मघटित यथार्थ को साहित्य का हिस्सा बनाये किन्तु श्रेष्ठ लेखक वह है, जो परघटित यथार्थ को साहित्य में उसी मार्मिकता से उभारे।

प्रेमचन्द का ~~साहित्य~~ साहित्य सामाजिक विद्रूपताओं का वस्तुनिष्ठ चित्रण एवं ग़रीब-गुरबा वर्ग का जीवन संघर्ष दिखाता है। गांधीवाद-नैतिकता एवं आदर्शवाद से प्रारंभ हुई उनकी यात्रा गोदान में पूर्णता को प्राप्त करती है

उनकी प्रकाश अभ्यस्त आँखे दलित शोषण को न केवल दर्शाती है बल्कि दलितों के प्रतिकार करने की क्षमता को भी दर्शाती है।

वस्तुत: 1930 के दशक में महात्मा गांधी तथा डॉ. अम्बेडकर के नेतृत्व में दलित समाज ऐतिहासिक करवट ले रहा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

था। ऐसे में उभरती दलित चेतना को प्रेमचन्द ने साहित्य (गोदान) का हिस्सा बनाया।

सिलिया के परिवार द्वारा दातादीन तथा मातादीन का विरोध करना तथा मातादीन के मुंह में हड्डी डालकर अपवित्र करना उसी दलित चेतना को दर्शाता है।

दलितों द्वारा संगठित रहना तथा उसके शोषण का प्रतिकार तत्कालीन समय की नवीन घटना थी, जिसे प्रेमचन्द ने अपनी कहानी सद्गति में भी दर्शाया है।

वस्तुत: अपनी उत्कृष्ट लेखनी के बल पर परघटित यथार्थ को अर्थात् शोषण की ~~विभीषिका~~ विभीषिका को प्रकट करना प्रेमचन्द जैसे परिपक्व रचनाकार की विशेषता है

किन्तु उक्त उपन्यास (गोदान) में कुछ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रसंग ऐसे भी है, जो दलित चेतना के विरोधी है। जैसे

→ ~~सोमी~~ रूपा द्वारा सोना को – 'सोना चमार सोना चमार कहना।

→ दातादीन का वाक्य – नीच जात लत्रियाए अच्छा

किन्तु उक्त वाक्य उपन्यास को और अधिक वास्तविकता ही प्रकट करते है, जहाँ समाज बच्चों को भी जातिगत शोषण से युक्त कर देता है।

सारांशत: स्पष्ट है कि गोदान दलित चेतना को साकार करने वाला एक महत्वपूर्ण रचना है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation